Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

कौटिल्य के राजदर्शन की आधुनिक राजनीति में प्रासंगिकता

Dr.pushpendar singh

Associate Professor
Major S.D.Singh University Fatehgarh Farrukhabaad
Department: Political Science

सारांश (Abstract)

भारतीय राजनीतिक चिंतन की परंपरा में आचार्य कौटिल्य का नाम अत्यंत सम्मान और गंभीरता के साथ लिया जाता है। उनका ग्रंथ अर्थशास्त्र न केवल प्राचीन भारत की राजनीतिक] आर्थिक एवं प्रशासनिक व्यवस्थाओं का दर्पण है] बल्कि आधुनिक राजनीति और शासन प्रणाली के लिए भी एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक सिद्ध होता है। कौटिल्य ने राज्य को केवल सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं माना, बल्कि उसे जनकल्याण] सुरक्षा] न्याय और आर्थिक समृद्धि का केंद्र बताया। उनके द्वारा प्रतिपादित राजधर्म] कूटनीति] गुप्तचर व्यवस्था] विदेश नीति तथा प्रशासनिक नियंत्रण जैसे सिद्धांत आज भी आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में प्रासंगिक दिखाई देते हैं।

वर्तमान वैश्विक राजनीति में जहाँ राष्ट्र सुरक्षा, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, आतंकवाद, भ्रष्टाचार तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों की जटिलताएँ बढ़ रही हैं, वहाँ कौटिल्य का यथार्थवादी राजनीतिक दृष्टिकोण नई दिशा प्रदान करता है। उनका मंडल सिद्धांत आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शक्ति संतुलन की अवधारणा से मेल खाता है। इसी प्रकार उनकी आर्थिक नीतियाँ आज के सुशासन, कर व्यवस्था और लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणाओं को भी प्रभावित करती हैं।

यह शोध आलेख कौटिल्य के राजदर्शन के प्रमुख सिद्धांतों का विश्लेषण करते हुए आधुनिक राजनीति में उनकी प्रासंगिकता का अध्ययन करता है। साथ ही यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन आज भी समकालीन राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्थाओं के लिए कितना उपयोगी और व्यवहारिक है।

मुख्य शब्द: कौटिल्य, अर्थशास्त्र, राजदर्शन, आधुनिक राजनीति, कूटनीति, सुशासन, राज्य व्यवस्था

प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय संस्कृति एवं राजनीतिक चिंतन की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। प्राचीन भारत में अनेक मनीषियों ने राज्य, शासन, न्याय और समाज व्यवस्था के संबंध में गहन विचार प्रस्तुत किए। इन महान विचारकों में आचार्य कौटिल्य का स्थान सर्वोपरि है। कौटिल्य] जिन्हें चाणक्य अथवा विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना जाता है, मौर्य साम्राज्य के निर्माता एवं चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री थे। उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ अर्थशास्त्र में राज्य संचालन] प्रशासन] कूटनीति] अर्थव्यवस्था] युद्धनीति और जनकल्याण से संबंधित विस्तृत सिद्धांत प्रस्तुत किए।

कौटिल्य का राजदर्शन मूलतः व्यावहारिक एवं यथार्थवादी है। उन्होंने आदर्शवाद की अपेक्षा व्यवहारिक राजनीति को अधिक महत्व दिया। उनका मानना था कि राज्य की स्थिरता एवं सुरक्षा सर्वोपरि है और इसके लिए राजा को आवश्यकतानुसार कठोर निर्णय लेने चाहिए। यही कारण है कि कई विद्वान उन्हें "भारत का मैकियावेली^^ भी कहते हैं] यद्यपि कौटिल्य का दृष्टिकोण मैकियावेली से अधिक व्यापक एवं नैतिक आधार वाला था।

आधुनिक राजनीति में लोकतंत्र] वैश्वीकरण] मानवाधिकार] राष्ट्रीय सुरक्षा] आर्थिक विकास तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों की चुनौतियाँ निरंतर बढ़ रही हैं। ऐसे समय में कौटिल्य के विचार पुनः प्रासंगिक हो उठे हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित सुशासन] कुशल प्रशासन] आर्थिक आत्मनिर्भरता] राष्ट्रीय सुरक्षा तथा कूटनीति के सिद्धांत आज भी नीति-निर्माताओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

कौटिल्य ने स्पष्ट रूप से कहा था कि "प्रजा के सुख में ही राजा का सुख निहित है। ^^यह विचार आधुनिक लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के मूल सिद्धांत "जनकल्याणकारी राज्य^^ से पूर्णतः मेल खाता है। इसी प्रकार उनका मंडल सिद्धांत आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति संतुलन की अवधारणा के समान दिखाई देता है।

वर्तमान समय में जब विश्व राजनीति में सामरिक प्रतिस्पर्धा] आतंकवाद] आर्थिक संकट तथा कूटनीतिक संघर्ष बढ़ रहे हैं] तब कौटिल्य का राजनीतिक दर्शन न केवल ऐतिहासिक अध्ययन का विषय है] बल्कि व्यावहारिक राजनीति के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। इस संदर्भ में कौटिल्य के राजदर्शन की आधुनिक राजनीति में प्रासंगिकता का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

कौटिल्य का राजदर्शन % एक परिचय

कौटिल्य का राजदर्शन राज्य की शक्ति, प्रशासनिक दक्षता और जनकल्याण पर आधारित है। उन्होंने राज्य को सात अंगों] स्वामी] अमात्य] जनपद] दुर्ग] कोष] दंड और मित्र] से निर्मित माना] जिसे ^^सप्तांग सिद्धांत^^ कहा जाता है। यह सिद्धांत आधुनिक राज्य के विभिन्न अंगों के समान प्रतीत होता है।

कौटिल्य के अनुसार राजा का प्रमुख कर्तव्य प्रजा की सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित करना है। उन्होंने प्रशासनिक अधिकारियों पर कठोर नियंत्रण, न्याय व्यवस्था की निष्पक्षता तथा भ्रष्टाचार के उन्मूलन पर विशेष बल दिया। उनकी दृष्टि में आर्थिक समृद्धि राज्य की स्थिरता का आधार है, इसलिए उन्होंने कृषि, व्यापार, कर व्यवस्था तथा राजकोषीय नियंत्रण को अत्यधिक महत्व दिया।

विदेश नीति के क्षेत्र में कौटिल्य का मंडल सिद्धांत अत्यंत प्रसिद्ध है। इसके अनुसार पड़ोसी राज्य स्वाभाविक शत्रु होते हैं, जबकि शत्रु का शत्रु मित्र माना जाता है। यह सिद्धांत आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति संतुलन और रणनीतिक गठबंधनों की अवधारणा के समान है।

आधुनिक राजनीति में कौटिल्य के राजदर्शन की प्रासंगिकता

1. सुशासन की अवधारणा

आधुनिक लोकतंत्र में सुशासन (Good Governance) को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। कौटिल्य ने प्रशासनिक पारदर्शिता, जवाबदेही तथा जनहितकारी नीतियों पर बल दिया। उन्होंने अधिकारियों की नियुक्ति योग्यता के आधार पर करने की बात कही तथा भ्रष्टाचार रोकने के लिए कठोर दंड व्यवस्था का समर्थन किया। आज भी प्रशासनिक सुधारों और भ्रष्टाचार नियंत्रण के क्षेत्र में कौटिल्य के विचार प्रासंगिक हैं।

2. राष्ट्रीय सुरक्षा और गुप्तचर व्यवस्था

वर्तमान समय में राष्ट्रीय सुरक्षा किसी भी राष्ट्र की प्राथमिक आवश्यकता है। कौटिल्य ने गुप्तचर व्यवस्था को राज्य की सुरक्षा का प्रमुख साधन माना। उन्होंने विभिन्न प्रकार के गुप्तचरों की नियुक्ति तथा सूचनाओं के प्रभावी उपयोग पर बल दिया।

आधुनिक खुफिया एजेंसियाँ जैसे RAW, CIA और IB इसी प्रकार की रणनीतियों का उपयोग करती हैं।

3. विदेश नीति और कूटनीति

कौटिल्य का मंडल सिद्धांत आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में अत्यंत प्रासंगिक है। आज विभिन्न राष्ट्र अपने हितों की रक्षा हेतु सामरिक गठबंधन बनाते हैं। भारत की "पड़ोसी प्रथम नीति" तथा विभिन्न वैश्विक मंचों पर रणनीतिक सहयोग कौटिल्य की कूटनीतिक सोच को प्रतिबिंबित करता है।

4. आर्थिक नीतियाँ और आत्मनिर्भरता

कौटिल्य ने राज्य की आर्थिक मजबूती को सर्वोपरि माना। उन्होंने कृषि, उद्योग, व्यापार तथा कर व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने पर बल दिया। वर्तमान समय में "आत्मनिर्भर भारत" जैसी नीतियाँ कौटिल्य की आर्थिक दृष्टि से मेल खाती हैं।

5. जनकल्याणकारी राज्य की अवधारणा

कौटिल्य ने स्पष्ट कहा कि शासक का सुख प्रजा के सुख में निहित है। यह विचार आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के "वेलफेयर स्टेट" सिद्धांत के समान है। सरकारों द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का संचालन इसी अवधारणा को दर्शाता है।

6. भ्रष्टाचार नियंत्रण

कौटिल्य ने भ्रष्टाचार को राज्य के लिए गंभीर खतरा माना। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार पानी में रहने वाली मछली के पानी पीने का पता लगाना कठिन है, उसी प्रकार अधिकारी द्वारा धन के दुरुपयोग को पहचानना कठिन होता है। इसलिए उन्होंने कठोर निगरानी और दंड व्यवस्था पर बल दिया।

आज के प्रशासनिक तंत्र में लोकपाल, सतर्कता आयोग तथा पारदर्शिता कानून इसी दिशा में प्रयास हैं।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

यद्यपि कौटिल्य का राजदर्शन अत्यंत व्यावहारिक एवं प्रभावशाली है, फिर भी इसमें कुछ सीमाएँ भी हैं। उन्होंने राज्यहित को सर्वोच्च मानते हुए कई बार कठोर और अनैतिक उपायों का समर्थन किया। आधुनिक लोकतंत्र में मानवाधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा नैतिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया जाता है, इसलिए कौटिल्य की कुछ नीतियाँ वर्तमान समय में विवादास्पद प्रतीत हो सकती हैं।

इसके बावजूद उनके प्रशासनिक कौशल, आर्थिक दृष्टिकोण तथा कूटनीतिक सिद्धांत आज भी राजनीतिक विज्ञान और लोक प्रशासन के अध्ययन में अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

कौटिल्य का राजदर्शन भारतीय राजनीतिक चिंतन की अमूल्य धरोहर है। उनका अर्थशास्त्र केवल प्राचीन शासन व्यवस्था का ग्रंथ नहीं, बल्कि आधुनिक राजनीति, प्रशासन और कूटनीति के लिए भी एक प्रभावी मार्गदर्शक है। उन्होंने राज्य को जनकल्याण] सुरक्षा] आर्थिक समृद्धि और न्याय पर आधारित संस्था के रूप में देखा।

आधुनिक राजनीति में सुशासन, राष्ट्रीय सुरक्षा, विदेश नीति, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा भ्रष्टाचार नियंत्रण जैसे क्षेत्रों में कौटिल्य के विचार अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होते हैं। उनका यथार्थवादी दृष्टिकोण आज की वैश्विक राजनीति की जटिलताओं को समझने में सहायक है।

यद्यपि समय और परिस्थितियों के अनुसार कुछ सिद्धांतों में परिवर्तन आवश्यक है, फिर भी कौटिल्य की राजनीतिक दूरदर्शिता और प्रशासनिक कुशलता आज भी नीति-निर्माताओं एवं विद्वानों के लिए प्रेरणास्रोत बनी हुई है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कौटिल्य का राजदर्शन केवल ऐतिहासिक महत्व का विषय नहीं है, बल्कि आधुनिक राजनीति के लिए भी अत्यंत उपयोगी और प्रासंगिक है।

संदर्भ सूची (References)